श्रीः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि॥

स्कन्दपुराणे सनत्कुमारसंहितायां

# ॥ श्रीलक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

*This document* has been prepared by*

***Sunder Kidambi***

*with the blessings of*

**श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्**

**His Holiness *śrīmad āṇḍavan* of *śrīraṅgam***

*This was typeset using LaTeX and the **skt** font. Our sincere thanks to Sri. K. Muralidharan of Singapore for proofreading the text.

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

# ॥ श्रीलक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

नाम्नां साष्ट सहस्रं च ब्रूहि गार्ग्य ! महामते !।
महा लक्ष्म्या महा देव्या भुक्ति मुक्त्यर्थ सिद्धये॥ १ ॥

गार्ग्य उवाच
सनत्कुमारम् आसीनं द्वादशादित्य सन्निभम्।
अपृच्छन् योगिनो भक्त्या योगिनामर्थ सिद्धये॥ २ ॥

सर्व लौकिक कर्मभ्यो विमुक्तानां हिताय वै।
भुक्ति मुक्ति प्रदं जप्यमनु ब्रूहि दयानिधे !॥ ३ ॥

सनत्कुमार ! भगवन् ! सर्वज्ञोऽसि विशेषतः।
आस्तिक्य सिद्धये नृणां क्षिप्र धर्मार्थ साधनम्॥ ४ ॥

खिद्यन्ति मानवाः सर्वे धनाभावेन केवलम्।
सिद्धयन्ति धनिदोऽन्यस्य नैव धर्मार्थ कामनाः॥ ५ ॥

दारिद्र्य ध्वंसिनी नाम केन विद्या प्रकीर्तिता।
केन वा ब्रह्म विद्यापि केन मृत्यु विनाशिनी॥ ६ ॥

सर्वासां सार भूतैका विद्यानां केन कीर्तिता।
प्रत्यक्ष सिद्धिदा ब्रह्मन् ! तामाचक्ष्व दयानिधे !॥ ७ ॥

सनत्कुमार उवाच
साधु पृष्टं मह भागाः ! सर्व लोक हितैषिणः !।
महतामेष धर्मश्च नान्येषामिति मे मतिः॥ ८ ॥

ब्रह्म विष्णु महा देव महेन्द्रादि महात्मभिः।
सम्प्रोक्तं कथयाम्यद्य लक्ष्मी नाम सहस्रकम्॥ ९ ॥

यस्योच्चारण मात्रेण दारिद्र्यान्मुच्यते नरः।
किं पुनस्तज्जपाज्जापी सर्वेष्टार्थान् अवाप्नुयात्॥ १० ॥

अथ सङ्कल्पः

अस्य श्री लक्ष्मी दिव्य सहस्र नाम स्तोत्र महामन्त्रस्य आनन्द कर्दम चिक्लीतेन्दिरासुतादयो महात्मानो महर्षयः, अनुष्टुप् छन्दः, विष्णु माया शक्तिः, महा लक्ष्मीः परा देवता, श्री महा लक्ष्मी प्रसाद द्वारा सर्वेष्टार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ ध्यानम्

पद्मनाभ प्रियां देवीं पद्माक्षीं पद्म वासिनीम्।
पद्म वक्त्रां पद्म हस्तां वन्दे पद्मामहर्निशम्॥ १ ॥

पूर्णेन्दु वदनां दिव्य रत्नाभरण भूषिताम्।
वरदाभय हस्ताढ्यां ध्यायेत् चन्द्र सहोदरीम्॥ २ ॥

इच्छा रूपां भगवतः सच्चिदानन्द रूपिणीम्।
सर्व ज्ञां सर्व जननीं विष्णु वक्षस्स्थलालयाम्।
दयालुमनिशं ध्यायेत् सुख सिद्धि स्वरूपिणीम्॥ ३ ॥

अथ लक्ष्मी सहस्रनाम स्तोत्रम्

नित्यागतानन्तनित्या नन्दिनी जनरञ्जनी।
नित्य प्रकाशिनी चैव स्वप्रकाश स्वरूपिणी॥ १ ॥

महा लक्ष्मीः महा काली महा कन्या ससस्वती।
भोग वैभव सन्धात्री भक्तानुग्रह कारिणी॥ २ ॥

ईशावास्या महा माया महा देवी महेश्वरी।
हृल्लेखा परमा शक्तिः मातृका बीज रूपिणी॥ ३ ॥

नित्यानन्दा नित्य बोधा नादिनी जनमोदिनी।
सत्य प्रत्ययनी चैव स्वप्रकाशात्मरूपिणी॥ ४॥

त्रिपुरा भैरवी विद्या हंसा वागीश्वरी शिवा।
वाग्देवी च महा रात्रिः कालरात्रिः त्रिलोचना॥ ५॥

भद्र काली कराली च महा काली तिलोत्तमा।
काली कराल वक्त्राता कामाक्षी कामदा शुभा॥ ६॥

चण्डिका चण्ड रुपेशा चामुण्डा चक्र धारिणी।
त्रैलोक्य जयिनी देवी त्रैलोक्य विजयोत्तमा॥ ७॥

सिद्ध लक्ष्मीः क्रिया लक्ष्मीः मोक्ष लक्ष्मीः प्रसादिनी।
उमा भगवती दुर्गा चान्द्री दाक्षायणी शिवा॥ ८॥

प्रत्यङ्गिरा धरावेला लोक माता हरि प्रिया।
पार्वती परमा देवी ब्रह्म विद्या प्रदायिनी॥ ९॥

अरूपा बहु रूपा च विरूपा विश्व रूपिणी।
पञ्च भूतात्मिका वाणी पञ्च भूतात्मिका परा॥ १०॥

काली मा पञ्चिका वाग्मी हविःप्रत्यधि देवता।
देव माता सुरेसाना देव गर्भाऽम्बिका धृतिः॥ ११॥

सङ्ख्या जातिः क्रिया शक्तिः प्रकृतिः मोहिनी मही।
यज्ञ विद्या महा विद्या गुह्य विद्या विभावरी॥ १२॥

ज्योतिष्मती महा माता सर्व मन्त्र फलप्रदा।
दारिद्य ध्वंसिनी देवी हृदय ग्रन्थि भेदिनी॥ १३॥

सहस्रादित्य सङ्काशा चन्द्रिका चन्द्र रूपिणी।
गायत्री सोम सम्भूतिः सावित्री प्रणवात्मिका॥ १४॥

शाङ्करी वैष्णवी ब्राह्मी सर्व देव नमस्कृता।
सेव्य दुर्गा कुबेराक्षी करवीर निवासिनी॥ १५ ॥

जया च विजया चैव जयन्ती चापराजिता।
कुब्जिका कालिका शास्त्री वीणा पुस्तक धारिणी॥ १६ ॥

सर्वज्ञ शक्तिः श्रीशक्तिः ब्रह्म विष्णु शिवात्मिका।
इडा पिङ्गलिका मध्या मृणाली तन्तु रूपिणी॥ १७ ॥

यज्ञेशानी प्रथा दीक्षा दक्षिणा सर्व मोहिनी।
अष्टाङ्ग योगिनी देवी निर्बीज ध्यान गोचरा॥ १८ ॥

सर्व तीर्थ स्थिता शुद्धा सर्व पर्वत वासिनी।
वेद शास्त्र प्रभा देवी षडङ्गादि पद क्रम॥ १९ ॥

शिवा धात्री शुभानन्दा यज्ञ कर्म स्वरूपिणी।
व्रतिनी मेनका देवी ब्रह्माणी ब्रह्मचारिणी॥ २० ॥

एकाक्षरपरा तारा भव बन्ध विनाशिनी।
विश्वम्भरा धरा धारा निराधाराधिकस्वरा॥ २१ ॥

राका कुहूरमावास्या पूर्णिमाऽनुमती द्युतिः।
सिनीवाली शिवा वश्या वैश्व देवी पिशङ्गिला॥ २२ ॥

पिप्पला च विशालाक्षी रक्षोघ्नी वृष्टिकारिणी।
दुष्ट विद्राविणी देवी सर्वोपद्रव नाशिनी॥ २३ ॥

शारदा शरसन्धाना सर्व शस्त्र स्वरूपिणी।
युद्ध मध्य स्थिता देवी सर्व भूत प्रभञ्जनी॥ २४ ॥

अयुद्धा युद्धरूपा च शान्ता शान्तिस्वरूपिणी।
गङ्गा सरस्वती वेणी यमुना नर्मदापगा॥ २५ ॥

समुद्र वसना वासा ब्रह्माण्ड श्रोणि मेखला।
पञ्च वक्त्रा दश भुजा शुद्धस्फटिक सन्निभा॥ २६ ॥

रक्ताकृष्णा सिता पीता सर्व वर्णा निरीश्वरी।
कालिका चक्रिका देवी सत्या तु बटुका स्थिता॥ २७ ॥

तरुणी वारुणी नारी ज्येष्ठा देवी सुरेश्वरी।
विश्वम्भरा धरा कर्त्री गलार्गल विभञ्जनी॥ २८ ॥

सन्ध्या रात्रिः दिवा ज्योत्स्ना कला काष्ठा निमेषिका।
उर्वी कात्यायनी शुभ्रा संसारार्णव तारिणी॥ २९ ॥

कपिला कीलिकाऽशोका मल्लिका नव मल्लिका।
देविका नन्दिका शान्ता भञ्जिका भय भञ्जिका॥ ३० ॥

कौशिकी वैदिकी देवी सौरी रूपाधिकातिभा।
दिग्वस्त्रा नव वस्त्रा च कन्यका कमलोद्भवा॥ ३१ ॥

श्रीः सौम्य लक्षणातीरदुर्गा सूत्र प्रबोधिका।
श्रद्धा मेधा कृतिः प्रज्ञा धारणा कान्तिरेव च॥ ३२ ॥

श्रुतिः स्मृतिः धृतिर्धन्या भूतिरिष्टिर्मनीषिणी।
विरक्तिर्व्यापिनी माया सर्व माया प्रभञ्जनी॥ ३३ ॥

महेन्द्री मन्त्रिणी सिंही चेन्द्र जाल स्वरूपिणी।
अवस्थात्रयनिर्मुक्ता गुण त्रय विवर्जिता॥ ३४ ॥

ईषणत्रय निर्मुक्ता सर्व रोग विवर्जिता।
योगि ध्यानान्तगम्या च योग ध्यान परायणा॥ ३५ ॥

त्रयीशिखा विशेषज्ञा वेदान्त ज्ञान रूपिणी।
भारती कमला भाषा पद्मा पद्मवती कृतिः॥ ३६ ॥

गौतमी गोमती गौरी ईशाना हंस वाहनी।
नारायणी प्रभा धारा जाह्नवी शङ्करात्मजा॥ ३७ ॥

चित्र घण्टा सुनन्दा श्रीः मानवी मनु सम्भवा।
स्तम्भिनी क्षोभिणी मारी भ्रामिणी शत्रुमारिणी॥ ३८ ॥

मोहिनी द्वेषिणी विरा अघोरारुद्र रुपिणी।
रुद्रैकादशिनी पुण्या कल्याणी लाभ कारिणी॥ ३९ ॥

देव दुर्गा महा दूता स्वप्न दुर्गाष्ट भैरवी।
सुर्य चन्द्राग्नि रूपा च ग्रह नक्षत्र रूपिणी॥ ४० ॥

बिन्दु नाद कलातीता बिन्दु नाद कलात्मिका।
दशवायुजयाकारा कला षोडश संयुता॥ ४१ ॥

काश्यपी कमला देवी नाद चक्र निवासिनी।
मृडाधारा स्थिरा गुह्या देविका चक्र रूपिणी॥ ४२ ॥

अविद्या शार्वरी भुञ्जा जम्भासुर निबर्हिणी।
श्री काया श्री कला शुभ्रा कर्म निर्मूलकारिणी॥ ४३ ॥

आदि लक्ष्मीर्गुणाधारा पञ्च ब्रह्मात्मिका परा।
श्रुतिर्ब्रह्म मुखा वासा सर्व सम्पत्ति रूपिणी॥ ४४ ॥

मृत सञ्जीवनी मैत्री कामिनी काम वर्जिता।
निर्वाण मार्गदा देवी हंसिनी काशिका क्षमा॥ ४५ ॥

सपर्या गुणिनी भिन्ना निर्गुणा खण्डिता शुभा।
स्वामिनी वेदिनी शक्या शाम्बरी चक्र धारिणी॥ ४६ ॥

दण्डिनी मुण्डिनी व्याघ्री शिखिनी सोम संहतिः।
चिन्तामणिश्चिदानन्दा पञ्च बाणाग्र बोधिनी॥ ४७ ॥

बाणश्रेणिः सहस्राक्षी सहस्र भुज पादुका।
सन्ध्यावलिस्त्रिसन्ध्याख्या ब्रह्माण्ड मणि भूषणा॥ ४८ ॥

वासवी दारुणी सेना कुलिका मन्त्र रञ्जनी।
जित प्राण स्वरूपा च कान्ता काम्य वर प्रदा॥ ४९ ॥

मन्त्र ब्राह्मण विद्यार्थी नाद रूपा हविष्मती।
आथर्वणिः श्रुतिः शून्या कल्पना वर्जिता सती॥ ५० ॥

सत्ता जातिः प्रमाऽमेया प्रमितिः प्राणदा गतिः।
अवर्णा पञ्चवर्णा च सर्वदा भुवनेश्वरी॥ ५१ ॥

त्रैलोक्य मोहिनी विद्या सर्व भर्त्री क्षराक्षरा।
हिरण्य वर्णा हरिणी सर्वोपद्रव नाशिनी॥ ५२ ॥

कैवल्य पदवीरेखा सूर्यमण्डल संस्थिता।
सोम मण्डल मध्यस्था वह्निमण्डल संस्थिता॥ ५३ ॥

वायु मण्डल मध्यस्ता व्योम मण्डल संस्थिता।
चक्रिका चक्र मध्यस्था चक्र मार्ग प्रवर्तिनी॥ ५४ ॥

कोकिला कुलचक्रेशा पक्षतिः पङ्क्ति पावनी।
सर्व सिद्धान्त मार्गस्था षड्वर्णावरवर्जिता॥ ५५ ॥

शररुद्र हरा हन्त्री सर्व संहार कारिणी।
पुरुषा पौरुषी तुष्टिः सर्व तन्त्र प्रसूतिका॥ ५६ ॥

अर्ध नारीश्वरी देवी सर्व विद्या प्रदायिनी।
भार्गवी भूजुषी विद्या सर्वोपनिषदास्थिता॥ ५७ ॥

व्योमकेशाखिलप्राणा पञ्चकोश विलक्षणा।
पञ्चकोशात्मिका प्रत्यक्पञ्च ब्रह्मात्मिका शिवा॥ ५८ ॥

जगज्जरा जनित्री च पञ्च कर्म प्रसूतिका।
वाग्देव्याभरणाकारा सर्व काम्यस्थिता स्थिति॥ ५९ ॥

अष्टादशचतुःषष्टिपीठिका विद्यया युता।
कालिकाकर्षणश्यामा यक्षिणी किन्नरेश्वरी॥ ६० ॥

केतकी मल्लिकाऽशोका वाराही धरणी ध्रुवा।
नारसिंही महोग्रास्या भक्तानामार्तिनाशिनी॥ ६१ ॥

अन्तर्वला स्थिरा लक्ष्मीः अजरामरण नाशिनी।
श्रीरञ्जिता महा काया सोम सूर्याग्नि लोचना॥ ६२ ॥

अदितिर्देवमाता च अष्ट पुत्राष्ट योगिनी।
अष्ट प्रकृतिरष्टाष्टविभ्राजद्विकृताकृतिः॥ ६३ ॥

दुर्भिक्ष ध्वंसिनी देवी सीता सत्या च रुक्मिणी।
ख्यातिजा भार्गवी देवी देवयोनिस्तपस्विनी॥ ६४ ॥

शाकम्भरी महा शोणा गरुडोपरिसंस्थिता।
सिंहगा व्याघ्रगा देवी वायुगा च महाद्रिगा॥ ६५ ॥

अकारादिक्षकारान्ता सर्व विद्याधिदेवता।
मन्त्र व्याख्यान निपुणा ज्योतिःशास्त्रैक लोचना॥ ६६ ॥

इडा पिङ्गलिका मध्या सुषुम्ना ग्रन्थि भेदिनी।
काल चक्राश्रयोपेता काल चक्र स्वरूपिणी॥ ६७ ॥

वैशारदी मतिश्रेष्ठा वरिष्ठा सर्व दीपिका।
वैनायकी वरारोहा श्रोणिवेला बहिर्वलिः॥ ६८ ॥

जम्भिनी जृम्भिणी जम्भ कारिणी गण कारिका।
शरणी चक्रिकानन्ता सर्व व्याधि चिकित्सकी॥ ६९ ॥

देवकी देवसंकाशा वारिधिः करुणाकरा।
शर्वरी सर्व सम्पन्ना सर्व पाप प्रभञ्जनी॥ ७० ॥

एकमात्रा द्विमात्रा च त्रिमात्रा च तथाऽपरा।
अर्ध मात्रा परा सूक्ष्मा सूक्ष्मार्थार्थ पराऽपरा॥ ७१ ॥

एकवीरा विशेषाख्या षष्ठी देवी मनस्विनी।
नैष्कर्म्या निष्कला लोका ज्ञान कर्माधिका गुणा॥ ७२ ॥

सबन्ध्वानन्द सन्दोहा व्योमाकाराऽनिरूपिता।
गद्य पद्यात्मिका वाणी सर्वालङ्कार संयुता॥ ७३ ॥

साधु बन्ध पदन्यासा सर्वौकोघटिकावलिः।
षट्कर्मा कर्कशाकारा सर्व कर्म विवर्जिता॥ ७४ ॥

आदित्य वर्णा चापर्णा कामिनी वर रूपिणी।
ब्रह्माणी ब्रह्म सन्ताना वेद वागीश्वरी शिवा॥ ७५ ॥

पुराण न्याय मीमांसा धर्म शास्त्रागमश्रुता।
सद्यो वेदवती सर्वा हंसी विद्याधिदेवता॥ ७६ ॥

विश्वेश्वरी जगद्धात्री विश्व निर्माण कारिणी।
वैदिकी वेद रूपा च कालिका काल रूपिणी॥ ७७ ॥

नारायणी महा देवी सर्व तत्त्व प्रवर्तिनी।
हिरण्य वर्ण रूपा च हिरण्य पद सम्भवा॥ ७८ ॥

कैवल्य पदवी पुण्या कैवल्य ज्ञान लक्षिता।
ब्रह्म सम्पत्ति रूपा च ब्रह्म सम्पत्ति कारिणी॥ ७९ ॥

वारुणी वारुणाराध्या सर्व कर्म प्रवर्तिनी।
एकाक्षर पराऽऽयुक्ता सर्व दारिद्र्य भञ्जिनी॥ ८० ॥

पाशाङ्कुशान्विता दिव्या वीणा व्याख्याक्ष सूत्रभृत्।
एकमूर्तिस्त्रयीमूर्तिः मधु कैटभ भञ्जनी॥ ८१ ॥

साङ्ख्या साङ्ख्यवती ज्वाला ज्वलन्ती काम रूपिणी।
जाग्रन्ती सर्वसम्पत्तिः सुषुप्तान्वेष्ट दायिनी॥ ८२ ॥

कपालिनी महा दंष्ट्रा भ्रुकुटी कुटिलानना।
सर्वावासा सुवासा च बृहत्यष्टिश्च शक्करी॥ ८३ ॥

छन्दोगण प्रतिष्ठा च कल्माषी करुणात्मिका।
चक्षुष्मती महा घोषा खड्गचर्मधराशनिः॥ ८४ ॥

शिल्प वैचित्र्य विद्योता सर्वतोभद्र वासिनी।
अचिन्त्य लक्षणाकारा सूत्रभाष्य निबन्धना॥ ८५ ॥

सर्व वेदार्थ सम्पत्तिः सर्व शास्त्रार्थ मातृका।
अकारादि क्षकारान्त सर्व वर्णकृतस्थला॥ ८६ ॥

सर्व लक्ष्मीः सदानन्दा सारविद्या सदाशिवा।
सर्व ज्ञा सर्व शक्तिश्च खेचरी रूपगोच्छ्रिता॥ ८७ ॥

अणिमादि गुणोपेता परा काष्ठा परा गतिः।
हंस युक्त विमानस्था हंसारूडा शशिप्रभा॥ ८८ ॥

भवानी वासना शक्तिः आकृतिस्थाऽखिलाखिला।
तन्त्र हेतुर्विचित्राङ्गी व्योमगङ्गा विनोदिनी॥ ८९ ॥

वर्षा च वार्षिका चैव ऋग् यजुस् साम रूपिणी।
महा नदी नदी पुण्याऽगण्या पुण्य गुण क्रिया॥ ९० ॥

समाधिगत लभ्यार्था श्रोतव्या स्वप्रिया घृणा।
नामाक्षरपरा देवी उपसर्गनखाञ्चिता॥ ९१ ॥

निपातोरुद्वयीजङ्घा मातृका मन्त्र रूपिणी।
आसीना च शयाना च तिष्ठन्ती धावनाधिका॥ ९२ ॥

लक्ष्य लक्षण योगाढ्या ताद्रूप्य गणनाकृतिः।
सैक रूपा नैक रूपा सेन्दु रूपा तदाकृतिः॥ ९३ ॥

समासतद्धिता कारा विभक्ति वचनात्मिका।
स्वाहा कारा स्वधा कारा श्रीपत्यर्धाङ्ग नन्दिनी॥ ९४ ॥

गम्भीरा गहना गुह्या योनिलिङ्गार्ध धारिणी।
शेष वासुकि संसेव्या चषाला वर वर्णिनी॥ ९५ ॥

कारुण्याकार सम्पत्तिः कीलकृन् मन्त्र कीलिका।
शक्ति बीजात्मिका सर्व मन्त्रेष्टाक्षय कामना॥ ९६ ॥

आग्नेयी पार्थिवा आप्या वायव्या व्योम केतना।
सत्य ज्ञानात्मिकाऽऽनन्दा ब्राह्मी ब्रह्म सनातनी॥ ९७ ॥

अविद्या वासना माया प्रकृतिः सर्व मोहिनी।
शक्तिः धारण शक्तिश्च चिदचिच्छक्ति योगिनी॥ ९८ ॥

वक्त्रारुणा महा माया मरीचिर्मद मर्दिनी।
विराट् स्वाहा स्वधा शुद्धा नीरूपास्तिः सुभक्तिगा॥ ९९ ॥

निरूपितद्वयी विद्या नित्यानित्य स्वरूपिणी।
वैराज मार्ग सञ्चारा सर्व सत्पथ दर्शिनी॥ १०० ॥

जालन्धरी मृडानी च भवानी भव भञ्जनी।
त्रैकालिक ज्ञान तन्तुः त्रिकाल ज्ञान दायिनी॥ १०१ ॥

नादातीता स्मृतिः प्रज्ञा धात्री रूपा त्रिपुष्करा।
पराजिता विधानज्ञा विशिषित गुणात्मिका॥ १०२ ॥

हिरण्य केशिनी हेम ब्रह्म सूत्र विचक्षणा।
असङ्ख्येय परार्धान्त स्वर व्यञ्जन वैखरी॥ १०३ ॥

मधु जिह्वा मधु मती मधु मासोदया मधुः।
माधवी च महा भागा मेघ गम्भीरनिस्वना॥ १०४ ॥

ब्रह्म विष्णु महेशादि ज्ञातव्यार्थ विशेषगा।
नाभौ वह्नि शिखा कारा ललाटे चन्द्र शन्निभा॥ १०५ ॥

भ्रूमध्ये भास्करा कारा सर्व तारा कृतिर्हृदि।
कृत्तिकादि भरण्यन्त नक्षत्रेष्ट्यार्चितोदया॥ १०६ ॥

ग्रह विद्यात्मिका ज्योतिर् ज्योतिर्विन्मति जीविका।
ब्रह्माण्ड गर्भिणी बाला सप्तावरण देवता॥ १०७ ॥

वैराजोत्तम साम्राज्या कुमार कुशलोदया।
बगला भ्रमरांबा च शिव दूती शिवात्मिका॥ १०८ ॥

मेरु विन्ध्याति संस्थाना काश्मीर पुर वासिनी।
योग निद्रा महा निद्रा विनिद्रा राक्षसाश्रिता॥ १०९ ॥

सुवर्णदा महा गङ्गा पञ्चाख्या पञ्च संहतिः।
सुप्रजाता सुवीरा च सुपोषा सुपतिः शिवा॥ ११० ॥

सुगृहा रक्त बीजान्ता हत कन्दर्प जीविका।
समुद्र व्योम मध्यस्था सम बिन्दु समाश्रया॥ १११ ॥

सौभाग्य रस जीवातुः सारासार विवेकदृक्।
त्रिवल्यादि सुपुष्टाङ्गा भारती भरताश्रिता॥ ११२ ॥

नाद ब्रह्ममयी विद्या ज्ञान ब्रह्ममयी परा।
ब्रह्मनाडी निरुक्तिश्च ब्रह्म कैवल्य साधनम्॥ ११३ ॥

कालिकेय महोदार वीर्य विक्रम रूपिणी।
वडवाग्निः शिखा वक्त्रा महा कवल तर्पणा॥ ११४ ॥

महा भूता महा दर्पा महा सारा महा क्रतुः।
पञ्च भूत महाग्रासा पञ्च भूतादि देवता॥ ११५ ॥

सर्व प्रमाणा सम्पत्तिः सर्व रोग प्रति क्रिया।
ब्रह्माण्डान्तर्बहिर् व्याप्ता विष्णु वक्षो विभूषिणी॥ ११६ ॥

शाङ्करी विधि वक्त्रस्था प्रवरा वर हेतुकी।
हेम माला शिखा माला त्रिशिखा पञ्च मोचना॥ ११७ ॥

सर्वागम सदाचारा मर्यादा यातु भञ्जनी।
पुण्य श्लोक प्रबन्धाढ्या सर्वान्तर्यामि रूपिणी॥ ११८ ॥

साम गान समाराध्या श्रोत्र कर्ण रसायनम्।
जीव लोकैक जीवातुर् भद्रोदारविलोकना॥ ११९ ॥

तडित्कोटि लसत्कान्तिः तरुणी हरि सुन्दरी।
मीन नेत्रा च सेन्द्राक्षी विशालाक्षी सुमङ्गला॥ १२० ॥

सर्वमङ्गलसंपन्ना साक्षात् मङ्गल देवता।
देहहृद्दीपिका दीप्तिः जिह्म पाप प्रणाशिनी॥ १२१ ॥

अर्ध चन्द्रोल्लसद् दंष्ट्रा यज्ञवाटी विलासिनी।
महा दुर्गा महोत्साहा महा देव बलोदया॥ १२२ ॥

डाकिनीड्या शाकिनीड्या साकिनीड्या समस्तजुट्।
निरङ्कुशा नाकि वन्द्या षडाधाराधि देवता॥ १२३ ॥

भुवनज्ञानिनिःश्रेणी भुवनाकार वल्लरी।
शाश्वती शाश्वताकारा लोकानुग्रह कारिणी॥ १२४ ॥

सारसी मानसी हंसी हंस लोक प्रदायिनी।
चिन्मुद्रालङ्कृत करा कोटि सूर्य सम प्रभा॥ १२५ ॥

सुख प्राणिः शिरोरेखा नददृष्ट प्रदायिनी।
सर्व साङ्कर्य दोषघ्नी ग्रहोपद्रव नाशिनी॥ १२६ ॥

क्षुद्र जन्तु भयघ्नी च विष रोगादि भञ्जनी।
सदा शान्ता सदा शुद्धा गृहच्छिद्र निवारिणी॥ १२७ ॥

कलि दोष प्रशमनी कोलाहल पुरस्स्थिता।
गौरी काक्षणिकी मुख्या जघन्याकृति वर्जिता॥ १२८ ॥

माया विद्या मूल भूता वासवी विष्णु चेतना।
वादिनी वसु रूपा च वसुरत्न परिच्छदा॥ १२९ ॥

छांदसी चद्रहृदया मन्त्र स्वच्छन्द भैरवी।
वन माला वैजयन्ती पञ्च दिव्यायुधात्मिका॥ १३० ॥

पीताम्बरमयी चञ्चत् कौस्तुभा हरि कामिनी।
नित्या तथ्या रमा रामा रमणी मृत्यु भञ्जनी॥ १३१ ॥

ज्येष्ठा काष्ठाधनिष्ठान्ता शराङ्गी निर्गुण प्रिया।
मैत्रेया मित्रविन्दा च शेष्यशेष कलाशया॥ १३२ ॥

वाराणसी वासरताचार्यावर्त जनस्तुता।
जगदुत्पत्ति संस्थान संहारत्रय कारणम्॥ १३३ ॥

त्वमम्ब विष्णु सर्वस्वं नमस्तेऽस्तु महेश्वरि।
नमस्ते सर्वलोकानां जनन्यै पुण्य मूर्तये॥ १३४ ॥

सिद्ध लक्ष्मीः महा कालि महा लक्ष्मि नमोऽस्तु ते।
सद्योजातादि पञ्चाग्निः रूपा पञ्चक पञ्चकम्॥ १३५ ॥

तन्त्र लक्ष्मीः भवत्यादिः आद्याद्ये ते नमो नमः।
सृष्ट्यादि कारणा कार वितते दोष वर्जिते॥ १३६ ॥

जगल्लक्ष्मीः जगन्मातः विष्णु पत्नि नमोऽस्तु ते।
नव कोटि महा शक्ति समुपास्य पदाम्बुजे॥ १३७ ॥

कनत् सौवर्ण रत्नाढ्ये सर्वाभरण भूषिते।
अनन्तानित्य महिषि प्रपञ्चेश्वर नायकि॥ १३८ ॥

अत्युच्छ्रित पदान्तस्स्थे परम व्योम नायकि।
नाक पृष्ठ गताराध्ये विष्णु लोक विलासिनि॥ १३९ ॥

वैकुण्ठ राज महिषि श्रीरङ्ग नगराश्रिते।
रङ्ग नायकि भूपुत्रि कृष्णे वरद वल्लभे॥ १४० ॥

कोटि ब्रह्मादि संसेव्ये कोटि रुद्रादि कीर्तिते।
मातुलङ्गमयं खेटं सौवर्ण चषकं तथा॥ १४१ ॥

पद्मद्वयं पूर्ण कुंभं कीरं च वरदाभये।
पाशमङ्कुशकं शङ्खं चक्रं शूलं कृपाणिकाम्॥ १४२ ॥

धनुर् बाणौ चाक्षमालां चिन्मुद्रामपि बिभ्रती।
अष्टादश भुजे लक्ष्मीः महाष्टा दश पीठगे॥ १४३ ॥

भूमि नीलादि संसेव्ये स्वामि चित्तानुवर्तिनि।
पद्मे पद्मालये पद्मि पूर्ण कुम्भाभिषेचिते॥ १४४ ॥

इन्दिरेन्दिन्दिराभाक्षि क्षीर सागर कन्यके।
भार्गवि त्वं स्वतन्त्रेच्छा वशीकृत जगत्पतिः॥ १४५ ॥

मङ्गलं मङ्गलानां त्वं देवतानां च देवता।
त्वमुत्तमोत्तमानां च त्वं श्रेयः परमामृतम्॥ १४६ ॥

धन धान्याभि वृद्धिश्च सार्व भौम सुखोच्छ्रया।
आन्दोलिकादि सौभाग्यं मत्तेभादि महोदयः॥ १४७॥

पुत्र पौत्राभिवृद्धिश्च विद्या भोग बलादिकम्।
आयुरारोग्य सम्पत्तिः अष्टैश्वर्यं त्वमेव हि॥ १४८॥

पदमेव विभूतिश्च सूक्ष्मात् सूक्ष्मतरा गतिः।
सदयापाङ्ग सन्दत्त ब्रह्मेन्द्रादि पदस्थितिः॥ १४९॥

अव्याहत महाभाग्यं त्वमेवाक्षोभ्य विक्रमः।
समन्वयश्च वेदानाम् अविरोधस्त्वमेव हि॥ १५०॥

निःश्रेयस पद प्राप्ति साधनं फलमेव च।
श्री मन्त्रराजराज्ञी च श्री विद्या क्षेम कारिणी॥ १५१॥

श्रीं बीज जपसन्तुष्टा ऐं-ह्रीं-श्रीं-बीज पालिका।
प्रपत्ति मार्ग सुलभा विष्णु प्रथम किङ्करी॥ १५२॥

क्लीं कारार्थ सावित्री च सौमङ्गल्याधिदेवता।
श्री षोडशाक्षरी विद्या श्री यन्त्र पुर वासिनी॥ १५३॥

सर्व मङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तु ते।
पुनः पुनर्नमस्तेऽस्तु साष्टाङ्गमयुतं पुनः॥ १५४॥

सनत्कुमार उवाच
एवां स्तुता महा लक्ष्मीर्ब्रह्म रुद्रादिभिः सुरैः।
नमद्भिरार्तैर्दीनैश्च निस्स्वत्वैर् भोग वर्जितैः॥ १५५॥

ज्येष्ठाजुष्टैश्च निःश्रीकैः संसारा स्वपरायणैः।
विष्णु पत्नी ददौ तेषां दर्शनं दृष्टि तर्पणम्॥ १५६॥

शरत् पूर्णेन्दुकोट्याभधवलापाङ्ग वीक्षणैः।
सर्वान् सत्त्व समाविष्टान् चक्रे हृष्टा वरं ददौ॥ १५७॥

महालक्ष्मीरुवाच
नाम्नां साष्ट सहस्रं मे प्रमादाद्वापि यः सकृत्।
कीर्तयेत्तत् कुले सत्यं वसाम्याचन्द्र तारकम्॥ १५८ ॥

किं पुनर् नियमाज्जप्तुर्मदेकशरणस्य च।
मातृवत्सानुकम्पाहं पोषकी स्यामहर्निशम्॥ १५९ ॥

मन्नाम स्तवतां लोके दुर्लभं नास्ति चिन्तितम्।
मत्प्रसादेन सर्वेऽपि स्वस्वेष्टार्थमवाप्स्यथ॥ १६० ॥

लुप्त वैष्णव धर्मस्य मद्व्रतेष्ववकीर्णिनः।
भक्ति प्रपत्ति हीनस्य वन्द्यो नाम्नां स्तवोऽपि मे॥ १६१ ॥

तस्मादवश्यं तैः दोषैर्विहीनः पा पवर्जितः।
जपेत् साष्ट सहस्रं मे नाम्नां प्रत्यहमादरात्॥ १६२ ॥

साक्षादलक्ष्मी पुत्रोऽपि दुर्भाग्योऽप्यलसोऽपि वा।
अप्रयत्नोऽपि मूढोऽपि विकलः पतितोऽपि च॥ १६३ ॥

अवश्यं प्राप्नुयाद् भाग्यं मत्प्रसादेन केवलम्।
स्पृहेयमचिराद्देवा वरदानाय जापिनः।
ददामि सर्वमिष्टार्थं लक्ष्मीति स्मरतां ध्रुवम्॥ १६४ ॥

सनत्कुमार उवाच
इत्युक्त्वान्तर्दधे लक्ष्मीः वैष्णवी भगवत्कला।
इष्टा पूर्तं च सुकृतं भागधेयं च चिन्तितम्॥ १६५ ॥

स्वं स्वं स्थानं च भोगं च विजयं लेभिरे सुराः।
तदेतत् प्रवदाम्यद्य लक्ष्मी नाम सहस्रकम्।
योगिनः पठत क्षिप्रं चिन्तितार्थानवाप्स्यथ॥ १६६ ॥

गार्ग्य उवाच
सनत्कुमारो योगीन्द्र इत्युक्त्वा स दया निधिः।
अनुगृह्य ययौ क्षिप्रं तांश्च द्वादश योगिनः॥ १६७ ॥

तस्मादेतद् रहस्यं च गोप्यं जप्यं प्रयत्नतः।
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवाभ्यां भृगु वासरे॥ १६८ ॥

पौर्णमास्याम् अमायां च पर्वकाले विशेषतः।
जपेद्वा नित्य कार्येषु सर्वान् कामान् अवाप्नुयात्॥ १६९ ॥

॥ इति लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥